सर्वतः=सब ओर; **पाणिपादम्**=हाथ-पैर वाला; **तत्**=वह; **सर्वतः**=सब ओर; **अक्षि**=नेत्र; **शिरः**=सिर; **मुखम्**=मुख वाला है; **सर्वतः**=सब ओर से; **श्रुतिमत्**=कान वाला है; **लोके**=संसार में; **सर्वम्**=सब को; **आवृत्य**=व्याप्त करके; **तिष्ठति**=स्थित है।

अनुवाद

उस परमात्मा के हाथ, पैर, नेत्र, मुख और कान सब ओर हैं। इस प्रकार वह सबको व्याप्त करके स्थित है।।१४।।

तात्पर्य

परमात्मा श्रीभगवान् उस सूर्य के जैसे हैं, जो अमित किरण-राशि को विकीर्ण करता है। वे सर्वव्यापक हैं; ब्रह्मा से लेकर नन्हीं चींटी तक सब प्राणी उन्हीं में हैं। परमात्मा के असंख्य सिर, हाथ, पैर, और नेत्र हैं तथा जीव भी असंख्य हैं। ये जीव परमात्मा में, उन्हीं के आश्रय में स्थित हैं। अतएव परमात्मा सर्वव्यापी सिद्ध होते हैं। कोई जीवात्मा यह नहीं कह सकता कि उनके हाथ, पैर, नेत्र आदि सब ओर हैं। यह नहीं हो सकता। यदि वह यह समझता है कि अज्ञानवश ही उसे यह बोध नहीं है कि उसके हाथ-पैर आदि सर्वव्यापी हैं, तथा पूर्ण ज्ञान से युक्त होने पर वह यह जान जायगा, तो उसके ये विचार परस्पर असंगत हैं। तात्पर्य यह है कि प्रकृति-बद्ध जीवात्मा परात्पर नहीं है। परात्पर विष्णुतत्त्व जीवतत्त्व से सदा भिन्न है। परमेश्वर अपने हाथ का सीमारहित विस्तार कर सकते हैं; जीवात्मा नहीं। भगवद्गीता में श्रीभगवान् का वचन है कि यदि कोई भक्तिभाव से पुष्प, फल, अथवा जल ही चढ़ाता है तो वे उसे सहर्ष स्वीकार करते हैं। यदि वे कहीं दूर बैठे होते तो ऐसे कैसे सम्भव था? वस्तुतः यही श्रीभगवान् की सर्वशक्तिसम्पन्नता है। पृथ्वी से सुदूर अपने परमधाम में होते हुए भी वे अपना हाथ बढ़ाकर समर्पित वस्तु को अंगीकार कर लेते हैं। यह उनकी अप्रतिम शक्ति का ज्वलंत प्रभाव है। 'ब्रह्मसंहिता' में कहा गया है: **गोलोक एव निवसतिः** अपने परमधाम में नित्य लीलामग्न होने के साथ वे सर्वव्यापी भी हैं। अतएव इस श्लोक में परमात्मा भगवान् का वर्णन है, जीव का नहीं।

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।।१५।।

सर्व=सब; **इन्द्रिय**=इन्द्रिय; **गुण**=गुणों का; **आभासम्**=मूल स्रोत, **सर्व इन्द्रिय**=सब इन्द्रियों से; **विवर्जितम्**=रहित है; **असक्तम्**=अनासक्त; **सर्वभृत्**=सब का धारण-पालन करने वाला; **च**=भी; **एव**=निस्सन्देह; **निर्गुणम्**=प्राकृत गुणों से परे; **गुणभोक्तृ च**=गुणों का स्वामी भी है।

अनुवाद

परमात्मा सब इन्द्रियों का मूल स्रोत होते हुए भी प्राकृत इन्द्रियों से रहित है; सम्पूर्ण प्राणियों का धारण-पोषण करता है, परन्तु आसक्तिरहित है; माया के गुणों से